

शम्भु कुमार सिंह

यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन

:: मिथिलाक परम्परागत सीमा बृहदविष्णुपुराण (५म शताब्दी)क मिथिला महात्म्य खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा ऐ प्रकारेँ कएने छथि: ‘‘गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिसि पूर्व कौशिकी धारा पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा कमला त्रियुगा अमृता धेमुड़ा बागमती कृतसारा मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यासारा।’’

:: बृहदविष्णुपुराणमे मिथिलाक बारह गोट नामक उल्लेख भेटैत अछि:

मिथिला तीरभुक्तिश्च वैदेही नैमिकाननम।
ज्ञानशीलं कृपापीठं स्वर्णलांगलपद्धतिः।।
जानकी जन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्मषा।
रामानन्दकरी विश्वभाविनी नित्यमंगला।।

:: मिथिलाक आदि शासक विदेहक नाओंपर मिथिलाक नाओं ‘विदेह’ पड़ल।

::‘तिरहुत’ नामक उल्लेख सर्वप्रथम पुरुषोत्तमदेवक ‘त्रिकाण्डकोश’ (१२म शताब्दी) मे भेल अछि।

:: विदेह राज्यकुलक मिथिलापर शासनक समए ३००० ई.पू.सँ ६०० ई.पू. धरि अनुमानित अछि।

:: मिथिलामे पञ्जी बेवस्थाक सम्पादन कर्णाटवंशीय नरपति हरिसिंहदेवक द्वारा प्रारंभ भेल।

:: सप्तरत्नाकरक रचयिता छलाह चण्डेश्वर ठाकुर।

:: मिथिलाक प्रथम कर्णाटवंशीय शासक छलाह ‘नान्यदेव’ (१०९७ ई.)।

:: खण्डबला राजकुलक स्थापना म.म. महेश ठाकुर द्वारा १५५७मे भेल।

:: मिथिलापर ओइनवार राज्यवंशक शासन चौदहम शताब्दीक मध्यमे आरंभ भेल।

:: मिथिलामे भस्मसँ अंकित त्रिपुण्ड शिवभक्तिक, लम्बाकार श्रीखंडक टीका विष्णुभक्ति एवं सिन्दूरक ठोप शाक्त भावनाक प्रतीक मानल जाइत अछि।

:: मिथिलाक्षरक विकास तान्त्रिक यन्त्रसँ मान्य अछि। ई मानल जाइत अछि जे तिरहुताक्षरक आरंभ जइ मंगल चिह्न 'आँजी' सँ होइत अछि से तान्त्रिक कुण्डलनीक बोधक थिक।

:: मिथिलामे बिआहक अवसरपर गाओल जाइबला 'जोग' तन्त्रसँ सम्बद्ध मानल गेल अछि।

:: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्तिमूलक थिक।

:: मैथिलीय रागरागिनीक प्राचीनतम उल्लेख सिद्ध लोकनिक 'चर्यापद'मे उपलब्ध होइत अछि।

:: कर्णाटनरपति म. नान्यदेव (१०९७ ई.पू.) मिथिलामे अपन राज्य स्थापित करबाक पश्चात् 'सरस्वती हृदयालंकार' नामक संगीतग्रंथ लिखल जइमे सर्वप्रथम ओ मैथिलीय रागरागिनीक उल्लेख क्रमबद्ध रीतिएँ कएल।

:: मैथिलीय संगीतक सक्रिय गतिविधि ओ विकास-प्रसारक दृष्टिसँ म. हरिसिंहदेव (१२९६-१३२६)क राज्यकाल विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि।

:: 'तिरहुति' श्रृंगाररसक मधुरगीत थिक, जइमे नायक-नायिकाक संयोग-वियोगक रागात्मक वर्णन होइत अछि।

:: 'बटगवनी'मे सखी सबहक संग समागम-गृहमे पतिसँ अभिसारक हेतु जाइत नायिकाक वर्णन होइत अछि।

:: 'गोआलरी'क विषए-वस्तु होइत अछि गोपी सबहक संग कृष्णक नोंक-झोंक एवं केलिकौतुक।

:: 'रास'मे गोपी सबहक संग कृष्णक रासलीलाक वर्णन होइत अछि।

:: रासक सर्वप्रथम रचयिता छथि 'साहेबरामदास'।

:: मिथिलाक लोकवाणी हेतु 'मैथिली' शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम कोलब्रुक १८०१ ई.मे कएल, परन्तु ऐ नामकेँ प्रसिद्ध करबाक श्रेय मैथिली भाषा साहित्यक आदि उन्नायक ग्रियर्सन महोदयकेँ छन्हि।

:: कालानुसारेँ मूल भारोपीय भाषाक समए २५०० ई.पू. मानल जाइत

अछि।

:: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक इतिहास १२०० ई.पू. सँ मानल जाइत अछि।

:: बौद्धधर्मक सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तार'मे ''वैदेहीलिपि''क उल्लेख अछि जकरा मैथिली लिपिक प्राचीनतम स्वरूप कहल जा सकैत अछि।

:: कोनो युगमे शिष्ट ओ परिनिष्ठित साहित्यसँ भिन्न जे रचना होहत अछि से ओइ युगक लोक-साहित्य कहबैत अछि।

:: दीर्घ आख्यानपर आधारित गेयात्मक कथा 'लोकगाथा' कहल जाइत अछि।

:: मैथिलीक किछु प्रमुख लोकगाथा काव्य थिक– लोरिकाइन, सलहेस, अनंगकुसुमा, दुलरादयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, रईया रणपाल आदि।

:: 'वर्णरत्नाकर' निर्विवाद रूपसँ मैथिली साहित्यक प्रथम उपलब्ध गद्य ग्रंथ थिक।

:: विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा', पंचतंत्र, हितोपदेश आदि परंपराक संस्कृत नीतिकथा थिक।

::विद्यापतिक 'कीर्तिलता' अवहट्टक गद्यपद्यमय ग्रंथ थिक।

::'गोरक्षविजय' विद्यापतिक संस्कृत नाटक थिक, जइमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि।

::'विशुद्ध विद्यापति पदावली' विद्यापतिसँ कम-सँ-कम एक शताब्दीक पश्चातक संकलन थिक।

::१८७९ ई.मे दरभंगा राज हाई स्कूलक स्थापना भेल छल।

::१९६६ ई.मे मैथिली भारतक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रूपमे साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा स्वीकृत भेल।

::मैथिली अकादमीक स्थापना १९७६ ई.मे भेल।

::नाटकमे आंगिक, वाचिक, आहार्य, तथा सात्विक चारू प्रकारक अभिनय आवश्यक होइ छै।

::'अंकियानाट'क आदि रचयिता छलाह शंकरदेव (१४४९-१५६९)।

::मिथिलामे 'कीर्तनिञानाच'क परिपाटीक आरंभ नवद्वीपक कीर्तनमंडलीक प्रभावसँ भेल १७म शताब्दीक आदिमे।

(स्रोत: मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश')

मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता

(यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

मैथिली भारोपीय भाषा परिवारक, भारतीय आर्यभाषासँ उत्पन्न एक महत्वपूर्ण आर्यभाषा थिक। ऐ भाषाक उद्भव ओ विकासक जेहन प्राचीन साहित्यिक मान्यता उपलब्ध अछि ओहन भारतक कोनो आधुनिक आर्य आ द्रविड़ भाषाक नै अछि।

कोनो सशक्त भाषाक अन्तर्गत ओकर अनेक बोली अथवा उपभाषाक निर्माण कालक्रमसँ क्षेत्रानुसार अवश्य होइत रहैत अछि। तकर कारण अनेक अछि। प्रत्येक भाषा अपन चारूकातक भाषासँ प्रभावित होइत अछि। ऐ क्रममे ईहो कहल जाइत अछि जे प्रत्येक कोसपर बोली बदलैत अछि आ प्रत्येक जाति वा समाजक भाषा भिन्न होइत अछि। डॉ. सुभद्र झा एवं ग्रियर्सन सन विद्वान लोकनि ई पहिनहि स्पष्ट कऽ देने छथि जे मैथिली एक स्वतंत्र आ सशक्त भाषा थिक। ऐ भाषाक चारूकात चारि गोट भाषा अछि। एकर पूबमे बंगला भाषा, पश्चिममे भोजपुरी, उत्तरमे नेपाली आ दक्षिणमे मगही भाषा अछि। ईहो स्वतः सिद्ध अछि जे कोनो भाषा अपन निकटवर्ती भाषा सभसँ प्रभावित होइत रहैत अछि।

उपर्युक्त कारणसँ मैथिली भाषामे अनेक बोली अथवा उपभाषाक जन्म भऽ गेल अछि। सर्वप्रथम मैथिली भाषाक विभिन्न उपभाषाक परिचए डॉ. ग्रियर्सन अपन "Linguistic Survey of India"क दोसर भागमे प्रस्तुत कएने छथि। हिनका अनुसारेँ मैथिलीक छः गोट उपभाषा अछि:- (१) मानक मैथिली (२) दक्षिणी मानक मैथिली (३) छिका-छिकी बोली (४) पूर्वी मैथिली (५) पश्चिमी मैथिली (७) जोलहा बोली।

ग्रियर्सनक उपर्युक्त उपभाषा वा बोलीक वर्णनसँ पं. गोविन्द झा सहमत नै छथि। हिनक कहब छन्हि जे मैथिलीक विभिन्न बोलीकेँ क्षेत्रानुसार पाँच उपभाषामे बाँटल जा सकैछ: (१) पूर्वी मैथिली (२) दक्षिणी मैथिली (३) पश्चिमी मैथिली (४) उत्तरी मैथिली (५) केन्द्रीय मैथिली वा उपभाषा।

उपर्युक्त विवेचनासँ लगैत अछि जे गोविन्द झा सेहो ग्रियर्सनक मतानुसार मैथिलीक उपभाषाक वर्णन केने छथि। ओना ओ कतौ-कतौ विभिन्न उपभाषाक क्षेत्र आदिमे कनेक अन्तर कऽ देने छथि, अस्तु मैथिलीक वर्तमान रूपकेँ देखल जाए तँ ज्ञात होइत अछि जे ग्रियर्सनक समैमे जे मैथिलीक विभिन्न

उपभाषाक क्षेत्र आ रूप छल ओइमे परिवर्तन भऽ गेल अछि। एकर अतिरिक्त नेपालक तराइमे जे मैथिली बाजल जाइत अछि ओकरो एकटा फराक रूप छै। एहना स्थितिमे मैथिलीक उपभाषाक वा बोलीक आठ गोट भेद कएल जा सकैत अछि:

१. **मानक मैथिली:** एकर क्षेत्र केन्द्रीय ओ उत्तरीय पुरना दरभंगा जिला (मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुर) थिक। ओना तँ डॉ. ग्रियर्सनक अनुसारेँ मानक मैथिली दरभंगा आ भागलपुर जिलाक उत्तरी क्षेत्रक आ पुर्णियाँ जिलाक पश्चिमी क्षेत्रक ब्राह्मण लोकनि बजै छथि। हिनका लोकनिक अपन साहित्य आ परंपरा छन्हि जे ऐ भाषाक विकृत प्रवाहकेँ मन्द कएने अछि। वर्तमानमे ई स्पष्ट भऽ गेल अछि जे मानक मैथिली ब्राह्मणे टाक बोली नै छन्हि, किएक तँ मैथिली भाषाक पठन-पाठनक प्रवृति ब्राह्मणसँ आनो जातिक मध्य पूर्ण रूपसँ जागल अछि। ऐ हेतु मानक मैथिली मिथिलाक सभ जातिक बोली कहल जा सकैत अछि।

२. **दक्षिणी मैथिली:** डॉ. ग्रियर्सनक दक्षिणी मानक मैथिलीकेँ दक्षिणी मैथिलीमे राखल जा सकैत अछि। एकर क्षेत्र मुंगेर, मधेपुरा, सहरसा ओ समस्तीपुर धरि मानल जा सकैत अछि।

मानक मैथिली आ दक्षिणी मैथिलीमे निम्न अन्तर अछि–(I) मानक मैथिलीमे जतए धातु स्वर ह्रस्व रहैत अछि ओतए दक्षिणी मैथिलीमे दीर्घ भऽ जाइत अछि। जेना-मानक मैथिलीमे, 'जनै छी' होइत अछि आ दक्षिणी मैथिलीमे, 'जानै छी'।

(II) सर्वनामक रूपमे मानक मैथिलीमे हमर, तोहर, अहाँ, अपने, आदि प्रयुक्त होइत अछि। दक्षिणी मैथिलीमे मोर, तोर, तोहे सर्वनामक प्रयोग होइत अछि।

(III) क्रियापदमे सेहो भिन्नता देखल जाइत अछि, उदाहरण स्वरूप मानक मैथिली 'अछि' दक्षिणी मैथिलीमे 'अछ' भऽ जाइत अछि।

३. **पूर्वी मैथिली:** ग्रियर्सन एकरा गँवारी मैथिलीक संज्ञा देने छथि। एकर क्षेत्र पूर्णियाँ जिलाक केन्द्रीय आ पश्चिमी भाग, संथाल परगनाक पूर्वी भाग, साहेबगंज आ देवघर धरि अछि। ग्रियर्सन कहैत छथि जे ई भाषा अशिक्षित वर्ग द्वारा बाजल जाइत अछि।

पूर्वी मैथिली, दक्षिणी मैथिली आ दक्षिणी मानक मैथिलीसँ साम्य रखैत अछि। ओना कनेक अन्तर सेहो देखना जाइत अछि– (I) दक्षिणी मैथिलीमे सम्बन्ध कारकमे 'के' प्रयोग होइत अछि, मुदा पूर्वी मैथिलीमे 'केर' चिह्नक

प्रयोग होइत अछि। (II) दक्षिणी मैथिलीमे 'छिक' क्रियाक प्रयोग होइत अछि, मुदा पूर्वी मैथिलीमे ओकर बदलामे 'छिकई' क्रियाक प्रयोग होइत अछि।

४. **छिका-छिकी बोली:** ई गंगाक दक्षिणी मुंगेरक पुबारी भागमे, दक्षिणी भागलपुर ओ संथाल परगनाक उत्तरी ओ पश्चिमी भागमे बाजल जाइत अछि। ई दक्षिणी मानक मधेपुराक बोलीसँ अत्यधिक साम्य रखैत अछि। ऐमे शब्दक अन्तमे 'की' वा 'हो' क उच्चारण कएल जाइत अछि, जेना– अपनो, खएबहो, कहबहो, सुनलहो आदि।

५. **पश्चिमी मैथिली:** एकर क्षेत्र मुजफ्फरपुर ओ चम्पारण जिलाक पुबरिया भाग थिक जइपर भोजपुरीक व्यापक प्रभाव अछि। ग्रियर्सनक अनुसारेँ ऐ क्षेत्रक कतिपय लोक जे बजैत छथि तकरा भोजपुरी कहल जाए अथवा मैथिली ई कहब कने कठिन। ओना मुजफ्फरपुरसँ अलग भेल वैशाली जिलाक क्षेत्रक भाषाक नाओं 'बज्जिका' भाषा देल गेल अछि। ऐ भाषाक नामकरण लिच्छवी वंशक इतिहासक आधारपर कएल गेल अछि।

६. **उत्तरी बोली:** एकर क्षेत्र नेपालक तराई आ वर्तमान सीतामढ़ी जिलाक उत्तरी भाग धरि मानल जा सकैत अछि। ऐ भाषापर नेपाली भाषाक प्रभाव बुझना जाइत अछि।

७. **जोलहा बोली:** पुरना दरभंगा जिलाक मुसलमानक बोलीकेँ डॉ. ग्रियर्सन जोलहा बोली मानैत छथि। ओना हिनक कहब छन्हि जे मिथिलाक मुसलमान मैथिली नै बजैत छथि। मुजफ्फरपुर आ चम्पारण जिलाक मुसलमान जे बोली बजैत छथि ओइपर अवधी भाषाक प्रभाव अछि। एकर अतिरिक्त वर्तमान कालक मुसलमानक बोलीपर उर्दू आ हिन्दीक प्रभाव सेहो परिलक्षित होइत अछि।

८. **केन्द्रीय मैथिली:** मध्य मिथिलाक (दरभंगा, मधुबनी, पंचकोशी) सम्पूर्ण क्षेत्रक भाषा जकर निकट कोनो आन भाषा नै अछि, तकरा केन्द्रीय मैथिलीक नाओंसँ जानल जाइत अछि। केन्द्रीय मैथिली साहित्यक भाषाक अत्यन्त नजदीक कहल जा सकैत अछि। मानक मैथिली आ केन्द्रीय मैथिलीमे बहुत सामीप्य देखल जाइत अछि।

वर्तमानमे मैथिलीक दूटा उपभाषाक नवीन नामकरण भेटैत अछि– अंगिका ओ बज्जिका। छिका-छिकी, अर्थात् पूर्वी बोलीकेँ अंगिका कहल जाइत अछि जकर केन्द्र स्थल थिक भागलपुर। प्रायः भागलपुर महाभारत कालीन अंग राज्यक राजधानी छल तँए ऐ क्षेत्रक भाषाकेँ अंगिका कहल जाइत अछि। बज्जिकाक सम्बन्धमे विवेचना कएल जा चुकल अछि।

एतावता ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषाक क्षेत्रानुसार अनेक उपभाषा अछि। एखनौं धरि एकर पूर्णरूपेण सर्वेक्षण नै कएल गेल अछि नै तँ किछु आओर उपभाषाक सम्बन्धमे ज्ञात होइत, तँए ऐ बिन्दुपर भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ सर्वेक्षण हएब अत्यंत आवश्यक अछि।

मैथिली साहित्यक आदिकाल

(यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

मानव समुदाय सर्वदासँ समस्या सबहक समाधान करबाक लेल साकांक्ष रहल अछि। कोनो भाषाक जन्म कहिया भेल ऐ विषएमे किछु कहब कठिने नै अपितु असंभव सेहो अछि। यद्यपि किछु विद्वान भाषा सबहक जन्मपत्री बाहर करबामे व्यस्त रहलाह अछि किन्तु ओ लोकनि बरोबरि ऐ दिशामे असफल रहलाह अछि। लिखित उपलब्ध साधनपर एतबे कहल जा सकैछ जे अमुक समैमे अमुक भाषा-शब्द प्रचलित छल। ईएह हाल प्रत्येक भाषाक संग अछि।

साहित्यक शरीर अछि भाषा। संवेगात्मक अनुभूति जकरा साहित्यशास्त्रमे रसक आख्यान कहल जाइत अछि, भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्त होइछ, ओ तँए कोनो साहित्य इतिहाससँ संलिष्ट रहैत अछि। विश्वभाषाक इतिहासमे केवल संस्कृतेटा एहन विषए अछि जे पाणिनि द्वारा 'संस्कृत' भए तेना ने प्रतिष्ठित भेल जे अद्यापि अपन स्वरूप सभ ठाम सभ विषएमे एकरूप स्थिर कएने अछि।

भारतीय साहित्यक आरंभ प्रायः अंधकारमे विलीन अछि। मैथिली साहित्यक संग सेहो ईएह चरितार्थ होइत अछि। साहित्यक इतिहासकार मध्य बहुत दिन धरि ई विवादक विषए बनल रहल जे मैथिली साहित्यक उद्भव एवं विकासक प्रारंभ कहियासँ मानब?

प्राचीन समैसँ मिथिला संस्कृतक केन्द्र रहल अछि। सम्पूर्ण भारत विशेषतः पूर्वांचलक छात्र लोकनि संस्कृत अध्ययनक हेतु मिथिला अबैत छलाह। विद्याक प्रचार-प्रसारक कारणेँ एतए विद्वान लोकनिक संख्या अधिक छल। ई विद्वान लोकनि दर्शन, न्याय, ज्योतिष, गणित, आदिकेँ महत्वपूर्ण मानैत छलाह। फलस्वरूप जनभाषाक उपेक्षा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपमे होइते रहलै। मुदा एतबा होइतो ऐठामक लेखक तथा कविगण समए-समैपर जनभाषामे सेहो किछु रचना करैत छलाह। ऐ कारणेँ प्राचीनकालीन मैथिली

सामग्री अत्यंत सीमित रूपमे उपलब्ध होइत अछि।

किन्तु जतबा सामग्री मैथिलीक प्रारंभिक कालक अध्ययनक हेतु उपलब्ध अछि तकरा चारि भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि:- १.शब्द, २.वाक्यखंड, ३.सूक्ति तथा ४.लोकगीत एवं लोकगाथा। अध्ययनक सुविधाक हेतु ऐ सभ वर्गपर अलग-अलग प्रकाश देल जा सकैछ।

(१) **शब्द-** भाषा विज्ञानक अनुसार कोनो भाषाक हेतु शब्दक महत्व सर्वाधिक अछि। पहिने शब्दक प्रयोग होइ छै, तखन स्वरूपक। ऐ दृष्टिएँ प्रथम कोटिमे ओ सभ ग्रंथ अबैत अछि, जइमे मैथिली शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। यद्यपि ओ सभ ग्रन्थ संस्कृतमे लिखल अछि, किन्तु लेखक अपन भावकेँ पूर्ण रूपसँ व्यक्त करबाक हेतु तथा सरल एवं जनसाधारणक बुझबा योग्य बनएबाक हेतु अनेक स्थानपर पर्यायवाची मैथिलीक बेवहार कएलनि अछि। ऐ वर्गमे सर्वप्रथम किछु निबंधकार लोकनि अबैत छथि जे अपना निबंधमे मैथिलीकेँ स्थान देलनि। ऐ प्रकारक लेखक लोकनिमे नवम् (९वम) शताब्दीक लेखक वाचस्पति मिश्रक नाओं सर्वप्रथम लेल जाइत अछि। ई अपन प्रसिद्ध ग्रंथ शाङ्कर भाष्य टीका 'भामति'मे निगड़ शब्दवाची मैथिली 'हरि'क प्रयोग कएने छथि। ई शब्द देशी थिक आ हमरा लोकनिक ओतए आइ धरि प्रचलित अछि। ई शब्द मैथिलीक अप्पन अछि आ तेना ने पचि गेल अछि जे एकरा ऐसँ फराक करब असंभव छै। यद्यपि एखनौं विद्वान मंडली मध्य ई विवाद अछि जे ई शब्द सन्ताली छै। शब्द जँए प्रचलित छलै तँए एकरा अपनाओल गेल, अतएव ऐ शब्दकेँ मैथिलीक शुद्ध रूप कहब विशेष उपयोगी हएत।

दोसर लेखक छथि १०म् ११हम् शताब्दीक सर्वानन्द। डॉ. सुभद्र झा अपन निबंध Maithili Words in Sarvanand's Amarkosh मे पूर्ण रूपैँ विचार करैत कहैत छथि जे "सर्वदानन्दक 'अमरकोष'मे ४०० सँ ६०० बीचमे शुद्ध मैथिली शब्दक प्रयोग देखबामे अबैत अछि, जकरा मैथिलीक शुद्ध रूप कहल जा सकैछ।" मैथिलीकेँ असमी एवं बंगलासँ समता रहबाक कारणेँ ऐपर विवाद कएल गेल जे ई शब्द प्राचीन बंगला एवं असमीक प्रारंभिक रूप थिक। किन्तु ई तँ स्वाभाविक थिक जे तखन भाषा अपन निर्माणक स्थितिमे रहल हएत, तँए ओइ समैक तद्युगीन भाषासँ कमे अंशमे अंतर रहतै तथा देशगत भिन्नता रहबाक कारणेँ पूर्ण रूपसँ एकर विकास हएब असंभव अछि। 'अमरकोष'मे प्रयुक्त ई शब्दावली मैथिलीक निज सम्पत्ति थिक जकरा अस्वीकार नै कएल जा सकैछ।

तृतीय सामग्री हमरा लोकनिकेँ पञ्जीमे उपलब्ध होइछ। डॉ. जयकान्त मिश्र एकरा सभसँ प्राचीन मानैत छथि : The Earliest of these are, of course, the oldest Vernacular names of places and persons found in the early Panji records. किन्तु एतए एकटा तथ्य विचारसंगत अछि जे पञ्जीक प्रारंभ १३१० ई. मानल गेल अछि, तँए ऐमे पओल गेल शब्दकेँ वाचस्पति मिश्र एवं सर्वानन्दक पश्चातहिक मानब उचित हएत। पञ्जी सेहो संस्कृतहिमे अछि किन्तु किछु शब्द एहन भेटैत अछि जे मैथिलीक थिक।

शब्द सबहक ऐ प्रकारेँ प्रयोग चौदहम एवं पन्द्रहम शताब्दीक अन्य विद्वान सभ यथा चण्डेश्वर ठाकुर, रूचिपति, जगद्धर, वाचस्पति द्वितीय तथा विद्यापति ठाकुर सेहो कएने छथि। डॉ. उमेश मिश्र अपन निबंध शीर्षक Chandeshwar and Maithili मे चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा प्रयुक्त मैथिली शब्द सबहक चर्चा कएने छथि। तथा पुनः ओ Journal of Bihar Orissa Research Society १९२८क पृष्ठ संख्या २६६मे Maithili Words of the 15th Century शीर्षक निबंधमे रूचिपति एवं जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्दक चर्चा करैत ओ लिखैत छथि- In this commentary Ruchipati has now and then used words of Maithili, His mother-tongue, in order to give the exact meaning of some of the words of Sanskrit and Prakrit. उदाहरणस्वरूप किछु शब्दकेँ देखल जा सकैछ:-

संस्कृत	मैथिली
कर्तरिल	कतरनी
जलग्रह	जलढ़री
पलांदु	पियाजु
पोत	डोंगी
कर्मान्तिक	कामत, कमती
विहंगिक	बँहगी
सुवासिनी	सुआसिन
पर्यङ्क	पलंग
पुत्रिक	पुतरी
आलवाल	थाल, कादो इत्यादि।

डॉ. मिश्र ओइ निबंधमे जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्द सबहक सेहो वर्णन

कएलनि अछि। जगद्धरक 'मालती-माधव' तथा 'वेणीसंहार' दुनू टीकामे मैथिली शब्द पाओल जाइत अछि यथा:

संस्कृत	**मैथिली**
दोड़दह	दोहर
चोर्णकम	टोप्पर
ग्रह	गोह
अलवालम	थाल, कादो
प्राजनम्	पैना
यूथिका	जूही आदि।

वाचस्पति मिश्र द्वितीय द्वारा लिखित 'तत्वचिन्तामणि'क अंग्रेजी अनुवादक भूमिकामे सेहो डॉ. उमेश मिश्र सिद्ध कएने छथि जे वाचस्पति मिश्र द्वितीय सेहो अनेक मैथिली शब्दक प्रयोग कएने छथि।

(२) वाक्यखंड

शब्दक अतिरिक्त हमरा लोकनिकेँ मैथिली वाक्यखंड सबहक प्रयोग सेहो भेटैत अछि। जखन भारतवर्षमे अंग्रेजी राज्यक सुदृढ़ स्थापना भए गेल, तखन अंग्रेज लोकनि भारतक क्षेत्रीय भाषा सबहक आधुनिक अनुसंधान प्रणालीक अनुसारेँ अध्ययन प्रारंभ कएलनि। ऐ क्रममे म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ सबहक अनुसंधान करबाक भार भेटलनि। म.म. शास्त्री ऐ क्रममे नेपाल गेलाह, ओतए हुनका १९१६ ई.मे तीन गोट ग्रंथ भेटलनि, जकरा ओ 'बौद्धगान ओ दोहा' नाओंसँ प्रकाशित करौलनि। उक्त तीनू ग्रंथ थिक (क) दोहाकोष (ख) चर्याचर्य विनिश्चय (ग) डाकार्णव।

ऐ ग्रंथ सबहक रचनाकाल आठम शताब्दीसँ एगारहम शताब्दी धरि मानल जाइत अछि। ओइ समैमे आधुनिक भाषा सभ विकासोन्मुख छल, किन्तु विकसित नै भेल छल, तँए हेतु भाषा-विज्ञानी लोकनि ओइ रचनामे भारतीय पूर्वांचलक प्रायः सभ भाषाक रूप पबैत छथि। सिद्ध लोकनिक विषएमे जखन विशेष अनुसंधान भेल तँ हुनका लोकनिक क्षेत्र गोरखपुरसँ भागलपुर धरि मानल गेल। जे सिद्ध लोकनि जइ क्षेत्रकेँ अपनौलनि से हुनका अपन रचनामे ओइ क्षेत्रक भाषाक प्रभाव देखबामे अबैत अछि। मैथिलीक प्रभाव सेहो सिद्ध लोकनिक रचनामे पाओल जाइत अछि। ऐ मतक पुष्टि करबाक हेतु निम्न तर्कपर दृष्टि देल जा सकैछ:

१. सिद्ध लोकनिक चर्चा ज्योतिरीश्वर अपन 'वर्णरत्नाकर'मे कएने छथि जइसँ अनुमान कएल जाइत अछि जे ओ लोकनि अपन मतक प्रचारार्थ मिथिला अवश्य गेल हेताह।

२. पदक शब्दावली सबहक वैज्ञानिक अध्ययन कएला सँ ई सिद्ध होइ छै जे ओ मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि।

३. हुनका लोकनिक पदमे जइ प्रकारक स्थानक वर्णन कएल गेल अछि तकरा मिथिलाक भौगोलिक स्थितिसँ विशेष साम्य छै।

४. ओइमे विभक्ति, विशेषण तथा किछु क्रियापद एहन अछि जे मैथिलीमे प्रचुर मात्रामे प्रयोग कएल जाइत अछि।

सिद्ध साहित्यक भाषा, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विशुद्ध विद्यापति पदावली तथा ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक भाषासँ साम्य रखैत अछि। किछु सामान्य विशेषता ऐ सभ पदमे पाओल जाइत अछि यथा : दन्त्य वर्णक प्रधानता, 'एँ' क प्रयोग, चन्द्रबिन्दुक एक्के समान प्रयोग, 'हि' 'एँ' तथा 'ए' क ध्वनिक एक्के समान प्रयोग, जे, एहु, तरक, अप्पन, आदि सर्वनामक प्रयोग इत्यादि विशेषता समान अछि।

५. ओइ पद सभमे किछु लोकोक्ति तथा किछु वाक्यखंड एहन प्रयोग कएल गेल अछि जे मिथिलामे एखनौं प्रचलित अछि, यथा : (I) पहिल बियान, (II) बलाद बिआएल गबिया बाँझे (बरद बिआएल गाए रहल बाँझे) (III) बेङ्गसँ साँप बढ़िल जाए (IV) हाक पाड़ई (V) जे जे अएला ते ते गेला (VI) टूटि गेल कन्था इत्यादि।

६. किछु शब्दावली एहन अछि जे मैथिलीक प्राचीन रूप थिक। ओ शब्द सभ अखन विकसित भए दोसर रूप धारण कए लेलक अछि, यथा :

चर्यापद	मध्यकालीन मैथिली	आधुनिक मैथिली
आजि	आजि	आइ
चापी	चापिदेब	
तेन्तलि	-	तेतरि
बिआती	बाइति	बिअउती
टेंगी	-	टेंगारी
चगेरा	-	चङ्गेरा
भणइ	भनइ	भनथि

सिद्ध साहित्यक प्रधान कविगणमे किछु नाओं अछि सरहपा, कान्हपा, भुसुकपा, शबरपा, कुक्करीपा, लुईपा आदि। जतए धरि हिनक सबहक समैक प्रश्न अछि, हिनका लोकनिक समए संवत ८१७सँ मानल गेल अछि किएक तँ प्रथम कवि 'सरहपा'क आविर्भाव काल ८१७ मानल गेल अछि। ऐ तरहेँ हिनका लोकनिक समए ८सँ १२हम शताब्दी धरि निश्चित कएल गेल अछि।

दोहाकोषक भाषाकेँ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी शौरसेनी अपभ्रंश मानैत छथि। 'चर्याचर्य विनिश्चय'पर सेहो शौरसेनीक प्रभावकेँ ई स्वीकार करैत छथि: The Charyas belong to the early or old N.I.A Stage. Being the first attempt, the speech is not sure of its own forms learns on its stronger, better established Sisters and Aunts.

उपर्युक्त तर्क एवं प्रमाण सबहक आधारपर डॉ. सुभद्र झा अपन "Formation of Maithili Language" नामक ग्रंथमे चर्यापदक भाषाकेँ निर्विवाद रूपेँ मैथिलीक "छिकाछिकी" शाखाक अन्तर्गत मानैत छथि। किन्तु ई निर्विवाद नै अछि। एकरा प्राचीन बंगाली, प्राचीन असमियाँ तथा प्राचीन उड़िया सेहो कहल गेल अछि तथापि एतबा विवाद रहितौं अधिकांश विद्वान एकर भाषाकेँ प्राचीन मैथिली मानैत छथि। ऐ मतक समर्थक छथि- राहुल सांकृत्यायन, डॉ. के.पी. जायसवाल, म.म. डॉ. उमेश मिश्र, नरेन्द्रनाथ दास, डॉ. सुभद्र झा, श्री शिवनन्दन ठाकुर आदि।

अतएव निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे चर्यापदक भाषा प्राचीन मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि। कारण जे ऐमे प्रयुक्त वाक्यखंड, जे मैथिलीक थिक, आदिक पूर्ण प्रयोग पाओल जाइत अछि।

(३) सूक्ति

एकर पश्चात् डाक वचनावलीक स्थान अबैत अछि। अतिप्राचीन कालसँ मिथिला कृषि प्रधान मानल जाइत रहल अछि। एतुका भूमिमे ने नदीक अभाव छैक आ ने भूमि उस्सर छै। फलस्वरूप खेतीपर पूर्ण जोर देल जाइत रहलै। मिथिलावासी लोकनि ज्योतिषमे सेहो विशेष आस्था रखैत छलाह, फलस्वरूप कृषि एवं ज्योतिष संबंधी निअम आदिक विषएमे लोककेँ शिक्षा देबाक हेतु विद्वान लोकनि तत्कालीन प्रचलित जनभाषामे सूक्ति सबहक निर्माण करैत छलाह, जइसँ अनपढ़ लोक सेहो पूर्णरूपसँ लाभान्वित होइत छलाह। ऐ सूक्ति सबहक अन्तर्गत डाक, घाघ, आदिक वचन सभ अबैत अछि।

डाक वचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान चर्यापदो सँ प्राचीन मानैत छथि। कारण जे चर्यापदे जकाँ एकरो प्रचार उत्तर प्रदेश सहित समस्त पूर्वोत्तर भारतमे भेल। डाक वचनावलीक दू संस्करण मिथिलामे प्रकाशित भेल, कन्हैयालाल कृष्णदास द्वारा मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगासँ। भाषाक दृष्टिसँ दोसर संस्करण बेसी प्रामाणिक कहल जा सकैछ। कारण जे ई एक प्राचीन हस्तलिखित पोथीपर आधारित अछि। एकर भाषा अपभ्रंशसँ विशेष साम्य रखैत अछि। प्राचीन तालपत्रमे जे डाकवचन भेटैत अछि से ओइ 'अवहट्ट' मे भेटैत अछि, जइमे महाकवि विद्यापतिक 'कीर्तिलता' विद्यमान अछि। डाकक वचन अखनो मैथिल समाजमे प्रचलित अछि, किन्तु देश कालक व्यवधानसँ हुनक भाषामे अनेक परिवर्तन आबि गेल अछि जइसँ ओ आधुनिकताक छाप लऽ नेने अछि। प्राचीन स्वरूपक एकाध उदाहरण थिक :

मुहूर्त विचार : तिथि परमाणहि साठि दण्डा, से लए करए बारह खण्डा।
अद्दा, भद्दा, कार्तिक मूल, भनई डाक सबेटा निर्मूल।
तथा, सनिसत्ते शुष्क लए दुई छठि वेहफ्फए होइ विरूई,
बुध तीअ दोअसि सूर, मंगल दशमी परिहर दूर,
होए एगादशी सोमवारे, दग्धतिथि फुर गहिअ गोआरे।।
किछु आर उदाहरण:-
साओन पछबा बह दिन चारि
चूल्हिक पाछाँ उपजय सारि
साओन शुक्ला सप्तमी जौं गरजे अधरात
तो जाहू पिया मालवा हम जाएब गुजरात।

डाकक समएकेँ लऽ कए विद्वान सबहक मध्य अखन धरि मतैक्य नै अछि। हुनक निवास स्थानक विषय सेहो विवादग्रस्ते अछि। बंगाल, उत्तर प्रदेश, तथा मिथिला सभ हुनका अपन-अपन स्थानक मानैत अछि। मिथिलामे डाकक संबंधमे अनेक किवदंती प्रचलित अछि। ऐसँ ई अनुमान कएल जाइत अछि जे ई अवश्ये मिथिलाक छलाह। मिथिलामे जे किवदंती प्रचलित अछि तइ अनुसारेँ ई बराहमिहिरक पुत्र छलाह तथा जातिक गोआर।

कृषिसँ संबंधित डाकक प्रस्तुत वचन अद्यावधि प्रायः प्रत्येक लोकक कण्ठमे निवास कऽ रहल अछि:

थोड़कए जोतिहऽ अधिक मटिअबिह
ऊँच कए बान्हिहऽ आरि
ताहू पर जँ नै उपजय तँ

डाककेँ पढ़िहऽ गारि।
अथवा
साओन पछबा भादव पुरबा
आसिन बहै ईशान
कातिक कन्ता सिकियो ने डोलै,
कतए कए रखबऽ धान?
अथवा
शुक्र दिन केर बादरी, रहे शनिचर छाय
कहे डाक सुनु डाकिनी, बिनु बरसे नै जाय।।
अथवा
जौं पुरबैया पुरबा पाबै,
सुखले नदिया धार बहाबै

(४) लोकगीत एवं लोककथा

आदिकालक उपलब्ध सामग्रीक रूपमे लोकगीत एवं लोकगाथाक सेहो अपन महत्वपूर्ण स्थान अछि। ऐमे सँ किछु तँ पूर्ण साहित्यिक थिक। एकर एक विशेषता ई अछि जे ऐ सबहक नायक कोनो अवतारी वा अंशी पुरुष नै छलाह। एहन रचना सभमे लोरिक, सलहेस बिहुला, गोपीचन्द मरसीयाक गीत सभ अबैत अछि। संसारक प्रत्येक स्थानमे वीरपूजाक भावना वर्तमान छलै, मिथिला सेहो ऐ भावनासँ वंचित नै छल। उपलब्ध प्रमाणक आधारपर एतबा कहल जा सकैछ जे १३हम १४हम शताब्दीमे ओइ प्रकारक गानक प्रचार ऐठाम छल। कारण जे ज्योतिरीश्वर अपन ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर'मे लोरिक गीतक चर्चा कएने छथि। अतएव ई सिद्ध होइत अछि जे ई ऐसँ पूर्वक तँ अवश्ये थिक। ई गीत सभ अखनो मिथिलामे खूब गाओल जाइत अछि। मात्र जिह्वापर रहबाक कारणेँ एकर भाषा आधुनिक रूप धारण करैत गेलैक अछि। ऐ गीत सबहक भाषा अवश्ये प्राचीन मैथिली छल होएतै, किन्तु दुर्भाग्यवश ओइ प्रकारक गीत सबहक संग्रह एकठाम नै भेल अछि। ऐ दिशामे सर्वप्रथम डॉ. जी.ए. ग्रिर्यसन १९म शताब्दीक अन्तमे किछु कार्य कएलनि, हिनक संग्रह प्राचीनतम संग्रह मानल जाइत अछि। एकर पश्चात् 'लोरिक विजय'पर श्री मणिपद्मक एकगोट निबंध, दिसम्बर १९५३मे 'वैदेही'मे प्रकाशित भेल छलनि, जइमे ओ प्रमाणित कएने छलाह जे लोरिकक गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। लोरिक गाथाक प्रस्तुत पाँतीमे केहन धरावाहिकता तथा भाषाक



प्राचीनता अछि से द्रष्टव्य थिक :

आँगी मे जे झाँगी सोभए
रत्तन लागल हार
झाँगी मे जे मानिक सोभए
हीरा झमकार
से हँसइ जखन दामिनी दमकए
जकरा दिसि उठाकए तक्कए
दई करेजा सालि

लोरिकक प्रवाह अपूर्व आ ध्वनि-योजना अत्यधिक ओजस्वी अछि। एकर गायक ई गबैत-गबैत जेना प्रभक्त भए उठैत अछि एवं झूमए लगैत अछि, तथा ताल ठोकि टाहि मारैत अछि। ऐ बीचमे कनियो एकरा टोकि दिऔ अथवा स्थिर भावेँ गाबऽ कहिऔ तँ गायक झमान भए खसत। मंगलाचरणक ई पंक्ति केहन मोहक अछि :

"कंठ दीह कोकिला माय आ मधु सन दीह भास"
लोरिकक सदृश मरसीयाक गीतकेँ सेहो देखल जा सकैछ :
वनमे रोए कोयल जंगलमे रोए फातमा
घरमे रोए दुलहिन अभागलि रे हाय
एक रोए अम्मा दोसर रोवे धन्ना रे हाय
तेसर रोए दूध छारि बलवा रे हाय।

अतएव ई दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैछ जे १३हम १४हम शताब्दी धरि मैथिली भाषामे गीत तथा कथाक सृजन अवश्य होमए लागल छल।

एकरा सबहक अतिरिक्त निम्न साक्ष्य सबहक सम्यक अध्ययन सेहो कएल जा सकैछ:-

(अ) **वर्णरत्नाकर:-** एकर पश्चात् वर्णरत्नाकरक स्थान अबैत अछि। ऐठामसँ हमरा लोकनिकेँ मैथिली भाषाक क्रमबद्ध प्रगति दृष्टिगत होइत अछि। वर्णरत्नाकर मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रंथ थिक। १३हम १४हम शताब्दीमे मैथिली एक विकसित भाषा भए गेल। केवल शब्द, वाक्यखंड तथा किछु लोकगीतक नै अपितु वर्णरत्नाकर सदृश प्रौढ़ गद्य ग्रंथ, उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक पूर्ण विकसित रूप ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक रूपमे भेटैत अछि। ई १४हम शताब्दीक आदिकाल (१३२४)क रचना थिक। वर्णरत्नाकरक

विषयमे केवल एतबे धरि जोर दऽ कए कहल जा सकैछ जे ई प्राचीन उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक प्रगतिक द्योतक थिक। ई अखन धरि अपन महत्वसँ मिथिला ओ मैथिलीकेँ गौरवान्वित कऽ रहल अछि।

(ब) एकर अतिरिक्त प्राचीन मैथिलीक किछु सामग्री 'प्राकृत पैंगलम' तथा अन्य अपभ्रंश ग्रंथमे सेहो भेटैत अछि। प्राकृत पैंगलममे लोकभाषाक उदाहरण देल गेल छै। शिवनन्दन ठाकुरक मत छन्हि जे ऐमे प्रयुक्त किछु शब्द मैथिलीक थिक।

(स) विद्यापतिक अवहट्ट रचना 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका'मे प्राचीन मैथिलीक अनेक विशेषता पाओल जाइत अछि, यथा : क्रियाक स्त्रीलिंग रूप ए, एँ तथा हिं क प्रयोग पूर्वकालिक क्रियाक हेतु तथा 'ए' क प्रयोग आदि। ऐ लेल ई ग्रंथ सेहो महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।

ऐ सामग्री सबहक विषयमे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक उक्ति युक्तिसंगत अछि- These specimens allow us to have a glimpses of the language in its formative period.

उपर्युक्त सामग्री सबहक समीक्षा कएलासँ ई विषए स्पष्ट भए जाइत अछि जे अभिरूचि ऐठामक लेखकमे ८म शताब्दीसँ प्रारंभ भए गेल छल। एतबा धरि सत्य जे ओइ कालक जे रचना उपलब्ध अछि तइमे विशेषतः दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षक सबलता देखबामे अबैत अछि। आन प्रकारक रचना मौखिके रूपमे लोकक समक्ष उद्घाटित होइत रहल अछि तथा अनुमानसँ लोक एकर प्राचीन रूप जानबाक चेष्टा करैत अछि।

मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण

(यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

ज्ञान राशिक संचित कोष थिक साहित्य। शब्द आ अर्थक यथावत सद्भाव, जइमे मनुष्यक भावना आ बेधन चेष्टा समाविष्ट हुअए, सएह थिक साहित्य। जनताक चित्रवृतिक परम्पराक संग ओकर सामञ्जस्य देखाएबे साहित्यक इतिहास थिक। व्यापक, गहन आ अध्ययनक सुविधाक लेल साहित्यकेँ समैक विभिन्न परिधिमे बाँटब काल-विभाजन थिक। मुदा काल विभाजनक ई तात्पर्य कथमपि नै अछि जे एक कालक समाप्त भेलाक लगले पश्चात् दोसरहि दिन साहित्यक धारा दोसर दिशामे प्रवाहित होमए लगैत अछि। काल-विभाजन कोनो सुनिश्चित मापदण्ड अथवा कसौटी नै अछि। ऐ

लेल काल विशेषक नामकरण, कखनौं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ धार्मिक परिस्थितिक परिपेक्ष्यमे होइछ तँ कखनौं रचना विशेषक प्रवृति प्रावल्यक आधारपर। साहित्य अनन्त अछि। कोनो साहित्यक वैज्ञानिक ओ विधिवत ज्ञान ओइ साहित्यक अध्ययनसँ संभव होइत अछि। साहित्यक सम्यक अध्ययनक लेल युग विभाजन वा काल-विभाजन आवश्यक अछि। कोनो निर्जन प्रदेशक शैवलनी सदृश एकर धारा अबाध गतिसँ प्रवाहित होइत रहल अछि। अतः ओकर सम्यक विचारक परिचए पेबाक हेतु काल-विभाजन प्रयोजनीय अछि, उपयोगी अछि।

मैथिली साहित्यक काल-विभाजनपर जखन विचार करैत छी तँ ई एक गोट विचारणीय विषए बनि जाइत अछि। विभिन्न विद्वानक ऐ संबंधमे मत अछि एवं प्रसिद्ध इतिहासकार लोकनि ऐ प्रसंगे, विभाजन पृथक-पृथक कएल अछि। ओना तँ साहित्य प्रवाहमान धाराक सदृश्य अछि, जकर विभाजन दुःसाध्य नै प्रत्युत असंभव भऽ जाइत अछि; किन्तु अध्ययनक सुविधाकेँ दृष्टिमे राखि विभिन्न प्रवृतिक प्रधानता आर अप्रधानताक आधारपर विभाजन कऽ लेल जाइछ। ई विभाजन दू प्रकारेँ कएल जा सकैछ:

(I) देशकृत
(II) कालकृत

साहित्य तँ सार्वभौमिक ओ सर्वकालिक अछि। यदि देशकृत विभाजन कएल जाए तँ साहित्य पृथक-पृथक स्थानपर भिन्न-भिन्न नाओंसँ संबोधित कएल जाएत। कालकृत विभाजन किछु विशेष प्रवृतिक आधारपर कएल जाइछ। परिवर्तन मनुष्यक संग अवांछनीय रूपसँ अछि। सामाजिक, धार्मिक ओ राजनीतिक परिवर्तन भेल करैछ। कोनो युगमे कोनो खास तरहक प्रवृतिक प्रधानता पाओल जाइत अछि। 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति'। अतः प्रवृतिक अनुरूप ओइ कालक नामकरण कएल जाइछ; जइसँ ई कथमपि नै बुझबाक चाही जे आन-आन प्रवृतिक अवशेष भए जाइछ, अपितु ओ गौण रूपसँ सदिखन वर्तमान रहैछ। जइकालमे कोनो विशेष प्रवृतिक रचनाक प्रचुरता भेटैछ तँ ओ स्वतंत्र भऽ ओकर फराक नामकरण कएल जाइछ। ऐ प्रकारेँ कालकृत विभाजनक एक गोट आर विशेषता पाओल जाइत अछि ओ थिक ग्रंथकेँ विशेष प्रसिद्धि भेलासँ कोनो कालक भीतर जइ प्रकारक अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ चलि आबि रहल अछि, तँए ओइ प्रकारक रचनाकेँ ओइकालक अंतर्गत मानब उचित हएत। यद्यपि आनो-आन पुस्तक सभ ओइ कालक मध्य

असाधारण कोटिक किए नै प्राप्त हुअए।

अतः मैथिली साहित्यक युग विभाजन ऐ रचना प्रवृतिक आधारपर तीन युगमे भेल अछि– पहिल अछि गीतिकाव्य युग, दोसर–नाटक युग, आ तेसरकेँ–गद्य युगक संज्ञा देब उचित हएत। दोसर शब्दमे पहिलकेँ 'श्रृंगार युग' दोसरकेँ 'भक्ति युग' आ तेसरकेँ 'आधुनिक युग' कहल जा सकैछ।

प्रारंभिक युगमे मिथिलामे गीतिकाव्यक विशेष प्रचार-प्रसार रहलाक कारणेँ प्रायः गीति-युगक संज्ञा देल गेल। ऐ युगक प्रवर्तक छलाह अभिनव जयदेव महाकवि विद्यापति ठाकुर। हिनकासँ लऽ कए कवीश्वर चन्दा झा धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार रहल। कवीश्वरक मृत्युक पश्चात् ऐ युगक अवसान भऽ गेल।

मध्य युगमे आबि कए गीति काव्यक मधुर-मधुर गीत संयोगसँ नाटकक रचना दिसि लोकक प्रवृति झुकल। अतः ऐ युगकेँ 'नाटक युग'क संज्ञा देब उचित प्रतीत होइत अछि। ऐ युगमे हमरा लोकनिकेँ उमापति उपाध्याय कृत 'पारिजातहरण', म.म. रामदास झाक 'आनंदविजयाभिधान', काशीनाथकृत 'विद्याविलाप', कृष्णदेवकृत 'महाभारत' आ धनपतिकृत 'माधवानल काम कण्डला'सँ साक्षात्कार होइत अछि।

एवं प्रकारेँ नाट्य कलाक विशेष प्रदर्शन भेलासँ लोकक रूचि ओइसँ बदलैत गेल एवं वर्तमान युगमे लेखकक प्रवृति गद्य लिखबा दिसि विशेष झुकल। ऐ युगमे लेखक वृन्द गद्य साहित्यमे अपन मौलिक रचनामे उपन्यास, गल्प, कहानी, निबंध, लिखऽ दिसि विशेष रूचि देखौलनि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे अखन धरि जतेक काल-विभाजन मैथिली साहित्य मध्य कएल गेल अछि ओकर तिथि निर्धारण करबामे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किए नै अछि? मैथिली साहित्यक प्रथम काल-विभाजन करबाक प्रयास म.म. डॉ. उमेश मिश्र, मनबोध रचित कृष्णजन्मक अपन भूमिकामे कएलनि अछि। हिनका मतानुसारेँ :

(I) आदिकाल ११०० सँ १३०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १३०० सँ १८०० ई. धरि
(III) आधुनिक काल १८०० सँ अद्यतन।

उपर्युक्त विभाजन एक तँ मैथिलीकेँ धियानमे राखने अछि आ भाषाक विभिन्न रूपकेँ धियानमे राखि कएल गेल काल-विभाजन साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन नै कहाओत। साहित्यक इतिहासक काल-विभाजनमे भाषाक

अतिरिक्त कृत्ति, कर्ता पद्धति ओ विषएपर धियान देब आवश्यक अछि।

म.म. डॉ. उमेश मिश्र, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्‌क वार्षिक अधिवेशन, मार्च १९५३मे अध्यक्ष पदसँ ''मैथिली भाषा ओ साहित्य''पर भाषण दैत, राजनीति, सामाजिक ओ भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ समस्त साहित्यकेँ निम्न भागमे प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल १००० सँ १६०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १६०० सँ १८६० ई. धरि
(III) आधुनिक काल १८६० सँ १९५० ई. धरि।

ओ मिथिला भाषा तथा इतिहासकेँ ऐ प्रकारक उपादेयतापर विचार करैत तीनू युगमे नामकरण करैत छथि। आदियुगकेँ गीतियुग, मध्ययुगकेँ नाटकयुग एवं आधुनिक युगकेँ गद्ययुगक संज्ञासँ संबोधित कएल अछि। काल विभाजनक प्रसंगमे अपन विचारक परिवर्तनक कोनो युक्तिसंगत कारण म.म. मिश्रजी नै देने छथि। परन्तु हिनक पूर्वक काल-विभाजन एवं नवीन काल विभाजनक बीच डॉ. जयकान्त मिश्रक प्रबंध प्रकाशित भऽ चुकल छल। डॉ. मिश्रक काल-विभाजन ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे सर्वमान्य अछि तँ आश्चर्य नै जे म.म. जी अपन मतमे संशोधन कएने होथि। हिनक ऐ प्रकारक विभाजनमे कए प्रकारक दोष आबि गेल अछि जे सम्प्रति १९५० ई. मे आबि कऽ आधुनिक युगक समाप्ति मानैत छथि। मिथिला वा कोनो देशक जनताक चित्रवृत्त बहुल किछु राजनीतिक, सामाजिक साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थितिक होइत अछि, मुदा जखन १९५०पर दृष्टिपात करैत छी तँ सर्वथा असंगत बूझि पड़ैत अछि, ऐ कालमे कोनो राजनीतिक वा सामाजिक परिवर्तन नै पाबि रहल छी जकर आधार मानि म.म. मिश्रजी अपन विभाजन मध्य आधुनिक कालक समाप्ति कएल अछि। जँ हिनक धारणा छन्हि जे काल-विभाजन राजनीति, सामाजिक एवं भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ कएल जाए तँ राजनीतिक परिस्थितिकेँ धियानमे राखि सम्प्रति १९४७ मानि सकैत छलाह। ऐ प्रकारेँ विवेचना कएला उत्तर जखन हिनक विभाजनक साहित्यिक समीक्षा करैत छी, तँ हिनक परिभाषा अमान्य सिद्ध होइत अछि।

(२) डॉ. जयकान्त मिश्र साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित अपन शोध-प्रबंध The history of Maithili Literature, Volume-I मे राजनीतिक घटनाक साहित्य परंपरापर प्रभावक आधारपर काल विभाजनक प्रसंगे निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि–

(I) प्राक् मैथिली काल ८म शताब्दीसँ १२हम शताब्दी धरि

(II) प्रारंभिक मैथिली साहित्य १३०० ई.सँ १६०० ई.

(III) मध्यकालीन मैथिली साहित्य १६०० ई.सँ १८६० ई.

(IV) आधुनिक मैथिली साहित्य १८६० ई. सँ अद्यतन।

डॉ. मिश्रक उपर्युक्त कथन बहुतो अंशमे तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक कहल जाएत। यद्यपि अपन काल विभाजनक आधार ओ राजनैतिक घटनाक साहित्य परम्परापर प्रभावेकेँ राखलनि अछि। हिनका अनुसारेँ भाषा-वैज्ञानिक आ व्याकरणक दृष्टिएँ ई विभाजन समीचीन अछि। मुदा ऐमे सेहो किछु त्रुटि रहि गेल अछि। प्रारंभिक कालक समए जे १३०० ई. स्थिर कएल गेल अछि तकर आरंभ मानबाक कोनो कारण नै देल गेल अछि। १३०० ई. मानलाक कारणेँ ओइसँ पूर्वक बहुत रास रचना ऐ परिधिमे नै आबि सकल। मुदा विद्यापतिक पूर्वक साहित्यकेँ प्राक् विद्यापति साहित्यक संगे विस्तारसँ चर्चा कएने छथि। ऐ साहित्यमे 'वर्णरत्नाकर' तँ हिनक युग आरंभिक रचना थिके, चर्यापदोक चर्चा ओ बड़ परिश्रमपूर्वक केने छथि। तखन हिनक उपर्युक्त मत स्वतः संदेहात्मक भऽ जाइत अछि।

१३०० ई.मे मिश्रजी मुसलमानक आगमनक कारण प्रस्तुत करैत छथि। मिथिला सर्वदासँ कट्टर धर्मावलम्बी रहल तइसँ मिथिलापर मुसलमानक आगमनक कोनो प्रभाव नै पड़ए देल। एकर दोसर हेतु इहो भऽ सकैत अछि जे जयकान्त बाबूक धियान ज्योतिरीश्वरक गद्य ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर'पर होन्हि एवं एकर समए १३२४ ई. लगभग कहने छथि। १४०० ई.क अभ्यन्तर विद्यापतिक प्रभाव साहित्यपर मुख्य रहल। ऐ समैमे अपभ्रंशक पतनक अनन्तर पूर्वीय भारतमे मैथिलीक प्रयोग भेटैत अछि। श्री जयकात मिश्र ऐ काल-विभाजन अवसानक कारण प्रस्तुत करैत ओइनवार वंशक पतनक कारण प्रस्तुत करैत छथि।

ऐ प्रकारेँ १६०० ई.सँ मध्यकालक प्रारंभ मानल गेल अछि तइ हेतु विशेष उल्लेख नै कएल गेल अछि। ऐ युगमे मिथिलामे नाट्य साहित्यक पूर्ण प्रचार-प्रसार छल। जकरा ओ कीर्तनिञा नाटक कहल अछि। हिनका अनुसारेँ विद्यापति पदावलीक जे सशक्त धारा प्रवाहित भेलसे उमापतिसँ नाट्य रचनाक प्राचुर्य द्वारा एक महत्वपूर्ण ओ प्रौढ़ दिशान्तरकेँ प्राप्त कए नवयुग प्रवेश कएल परन्तु हिनक ई धारणा पूर्वाग्रहसँ अनुप्राणित अछि। वस्तुतः जकरा ओ मैथिलीक नाट्य परंपरा कहैत छथि ओ ओइसँ पूर्व विद्यापति एवं ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'सँ प्रारंभ भेल। ऐ समैक उल्लेख करैत मिश्रजी

नेपालक जगत प्रकाशमल्ल, उमापति उपाध्याय एवं शंकरदेवक नाम लैत छथि, जे ओ मैथिली नाट्यकलाक प्रवर्तकक रूपमे अबैत छथि। ऐ कालक अवसान सेहो खण्डबला कुलक अवसानसँ भेल।

डॉ. जयकान्त मिश्र आधुनिक युगक आरंभ १८६० ई.सँ मानलनि अछि, जखन कि दरभंगा राज कोट ऑफ वार्डस (Courts of Wards) क संरक्षण मे चलि गेल आर दरभंगा शहरमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार भेल। परन्तु जखन हम मिथिलाक सीमा मैथिलीक क्षेत्रकेँ दरभंगासँ बाहरो मानै छिऐ तँ खाली दरभंगेक स्थितिपर साहित्यक निर्धारण करब कतए धरि तर्कसंगत हएत?

(३) ऐ प्रकारेँ प्रो. श्रीकान्त मिश्र सेहो अपन इतिहासमे उपर्युक्त तथ्यक समर्थन कएल अछि। एवं क्रममे अनेक गतिरोधक मुख्य कारण प्रस्तुत करैत मिश्रजीक कथन अछि जे शिक्षा-पद्धतिमे बरोबरि मैथिलीक अवहेलना होइत रहल। समए पाबि साहित्यक आनो अंग सभ गद्य, पद्य आदिक विशेष प्रगति होइछ।

(४) तेसर काल-विभाजन कुमार श्री गंगानंद सिंह द्वारा कएल गेल अछि। अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक चौदहम अधिवेशनमे 'मैथिली साहित्यक प्रगति' शीर्षक निबंधपर भाषण दैत अपन मतक पूर्ण विवेचना कएल अछि:

(I) प्रारंभिक काल ८०० सँ १३०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १३०० सँ १८०० धरि
(III) आधुनिक काल १८०० सँ १९म, २०म शताब्दी धरि

प्रारंभिक कालमे ओ चर्यापदक आचार्य लोकनिक रचनाकेँ मानैत छथि, आ वाचस्पति मिश्रक 'भामति टीका' आ सर्वानन्दक 'अमरकोष टीका'मे संस्कृतक पर्यायवाची अनेक मैथिली शब्दक उल्लेख कएल अछि। परन्तु चर्यापदक भाषा मैथिलीक पूर्व रूप भलहिं भऽ सकैछ मुदा ओकरा मैथिली नै कहि सकैत छी। भाषाविज्ञानक अनुसारेँ ई बूझि पड़ैत अछि जे लिपिबद्ध नै भेलाक कारणेँ ओकर भाषामे बहुत परिवर्तन भेल तइसँ ओ बहुत किछु आधुनिक मैथिलीक रूप धारण कए लेने अछि। प्रारंभिक कालकेँ ८००ई. लऽ जएबाक कोनो तेहन युक्ति नै भेटैत अछि।

ऐ प्रकारेँ सम्प्रति मध्यकालमे जयकान्त मिश्रक प्रारंभिक मैथिली साहित्य ओ मध्यकालीन मैथिली साहित्य दुनूकेँ सन्निहित कऽ देल गेल अछि।

ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'कें मैथिलीक सभसँ प्राचीन उपलब्ध गद्य ग्रंथक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। ऐ भाषामे प्रोत्साहन एवं विकास तत्कालीन नृपतिगणक सहयोगक फलस्वरूप भेल। ऐमे अनेक कवि एवं लेखक लोकनिक प्रादुर्भाव भेलासँ साहित्यक अभिवृद्धिमे सहायक सिद्ध भेल।

वस्तुतः साहित्यक प्रारंभ ओ विकास ऐठाम केन्द्रित भऽ जाइत अछि। तइसँ १८०० ई. सँ वर्तमान काल मानवामे समुचित कारणक अभाव भेटैत अछि। ओ आधुनिक कालकें दू भागमे विभाजित करैत छथि। १९म शताब्दी धरि मैथिलीमे जतेक ग्रंथ सबहक चर्चा भेटैत अछि ओइपर भाषा एवं वाक्य विन्यासक दृष्टिएँ १८म शताब्दीक छाप बूझि पड़ैत अछि। परन्तु २०म शताब्दीमे आबि कऽ क्रमशः एकर प्रयास भेलै जे जतए जे छटा भेटलै ओकरा ग्रहण कए मैथिलीक कायाकल्प कएल जाए। ऐ विभिन्नताक मुख्य कारण राजनीतिक थिकै।

(५) ऐ काल विभाजनसँ मिलैत-जुलैत विभाजन श्री भोलालालदास 'मिथिला मिहिर'क मिथिलांकमे सेहो कएलनि अछि, जकर समानता ऐ विभाजनसँ अछि।

(६) मैथिली साहित्यक मूर्द्धन्य विद्वान आ प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. सुभद्र झा अपन शोध प्रबंध Formation of Maithili Language मे सेहो काल-विभाजन करबाक प्रयास कएल अछि। हिनक विभाजनमे सेहो कोनो मतसँ साम्य नै भेटैत अछि, अतएव एकरा स्वतंत्र विभाजन कहल जा सकैछ। हिनक विभाजन ऐ प्रकारेँ अछि:

(I) प्रारंभिक कालक मैथिली A.D १००० सँ A.D १३००
(II) मध्यकालीन मैथिली A.D १३०० सँ A.D १८००
(III) आधुनिक मैथिली A.D १८०० सँ अद्यतन।

आलोचकक अनुसारेँ डॉ. झा मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकास १००० ई.क पश्चाते मानैत छथि। संभव ई मानि जे 'वर्णरत्नाकर' मे प्रयुक्त भाषा ओकर रचनाकाल ३०० ई. पूर्व विकसित भेल छल। परन्तु की मिथिला-भाषा विकासक प्रक्रियाकें बुझबाक हेतु 'चर्यापद'क भाषा सहायक सिद्ध नै भऽ सकैछ? ऐ प्रकारेँ डॉ. झा १००० ई.क पूर्वक रचनापर धियान नै रखलनि अछि। १८०० ई. धरि मध्यकाल मानबाक हुनक आधार की अछि, तकरा स्पष्ट सेहो नै केने छथि। डॉ. झा काल विभाजनक क्रममे साहित्य परंपरापर धियान नै दए भाषाक विकासक दृष्टिएँ देखबाक प्रयास कएलनि।

मैथिलीक प्रारंभिक काल विद्यापतिक 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका'सँ मानैत छथि। ऐ प्रकारेँ ओ अपन निबंधमे लिखने छथि– Hence as the display the genius of the language they are termed pro to Maithili or Maithili at the earliest stage of its development.

वर्णरत्नाकरसँ कृष्णजन्म धरि मध्यकालीन मैथिलीकेँ उदारहण स्वरूप उपस्थित करैत छथि। 'कृष्णजन्म' जकर भाषावलोकन कएलासँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे मनबोधक शैली १८म शताब्दीक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

जखन कि प्रारंभिक मैथिली एवं मध्यकालीन मैथिली भाषामे सभ्यता आबि गेल तखन आधुनिक मैथिलीक रूप धारण कऽ लेलक। ऐ प्रकारेँ एकर उद्भव एवं विकास १९म शताब्दीकेँ मानि सकैत छी। ई कहबामे कठिनता अछि जे कोन युगमे ऐ साहित्यक कोन रूप छल एवं कोन स्थितिमे छल मुदा एतबा धरि अवश्य जे प्रत्येक युग अपन युगक छाप लैत अछि।

मैथिली साहित्यक समालोचक स्व. प्रो. रमानाथ झा मैथिली साहित्यक काल विभाजनक प्रसंगमे अपन मंतव्य डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' रचित 'मैथिली साहित्यक इतिहास'क भूमिकामे उपस्थित करैत छथि जे- "काल विभाजनक समस्यापर कोनो आचार्यक मतसँ हमरा संतोष नै अछि।" हिनक विभाजन ऐ प्रकारेँ अछि :

(क) विद्यापति युग- कृष्ण काव्य युग अथवा प्राचीन युग
(ख) चन्दा झा युग- कृष्ण काव्य युग अथवा नवीन युग।

समालोचक लोकनिक मतेँ निश्चित रूपेँ उपर्युक्त काल-विभाजन रचना पद्धतिक आधारपर समीचीन होइतो सर्वांगपूर्ण नै कहल जाएत, कारण मैथिली साहित्यक बहुत रास रचना ऐ काल विभाजने नै आबि सकत जेना 'चर्यापद', 'वर्णरत्नाकर' आदि। चन्दा झाक युगसँ पूर्वक समस्त मैथिली साहित्यकेँ प्राचीन युग मानब उचित नै बुझना जाइत अछि।

(८) डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन पुस्तक 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे काल विभाजनक प्रसंगमे निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि :

(१) आदिकाल, प्राक् ज्योतिरीश्वर काल अथवा अपभ्रंश युग– ई. पू. प्रथम शतकसँ १३०० ई. धरि

(२) विद्यापति युग–१३०० सँ १८६०

(क) विद्यापति युग–१७००

(ख) उत्तर विद्यापति युग–१७०० सँ १८६०

(३) आधुनिक काल–१८६० सँ अद्यःपर्यन्त (क) वातावरण निर्माण–१८६० सँ १८८० (ख) चन्दा झा युग–१८८० सँ १९३० (ग) नव-नव विकासक युग–१९३० सँ अद्यःपर्यन्त।

आलोचक लोकनिक अनुसारेँ हिनक मत बहुत अंश धरि समीचीन एवं तर्कपूर्ण बुझना जाइत अछि।

(९) डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा अपन अप्रकाशित शोध-प्रबंध 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास' एवं मेघातिथिक छद्म नाओंसँ ''मैथिली साहित्यक प्रमुख कविक मैथिली कविताक विकास'' शीर्षकमे निम्न तर्क प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल ११०० सँ १५५६ ई. धरि
(II) मध्यकाल १५५६ सँ १८५७ धरि
(III) आधुनिक काल १८५७ सँ अद्यःपर्यन्त।

आलोचकक अनुसारेँ हिनक दृष्टि शुद्ध साहित्यैतिहासिक हेबाक चाही मुदा से नै अछि। हिनक विभाजनसँ 'चर्यापद' मैथिलीक विवेच्य वस्तु नै रहि जाइत अछि, आ ११०० ई. धरि तँ एहन कोनो कृत्ति नै अछि जकरा आधार मानि ११०० ई.सँ आरंभिक काल मानल जाएत.....। डॉ. झा काल सीमाक विभाजनमे डॉ. जयकान्त मिश्रसँ प्रभावित बूझि पड़ैत अछि; यद्यपि समग्र रूपेँ ओहो साहित्यिक विकासक मर्मकेँ अनुभव करैत अवश्य प्रतीत होइत छथि।

प्रो. शैलेन्द्र मोहन झा अपन अप्रकाशित शोध-प्रबंध 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास'मे उपरोक्त विभाजनक संशोधन करैत निम्न रूपेँ प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल १३०० सँ १५५५ ई. धरि
(II) मध्यकाल १५५५ सँ १८५७ धरि
(III) आधुनिक काल १८५७ सँ अद्यःपर्यन्त।

(१०) स्वर्गीय डॉ. राधाकृष्ण चौधरी अपन पुस्तक A Survey of Maithili Literature मे निम्न रूपेँ काल विभाजनक प्रसंगमे अपन मत व्यक्त कएने छथि:

(I) Early Maithili Literature 900-1350 A.D
(II) Middle Maithili Literature 1350-1830 A.D
(III) Early Maithili Literature 1830- till dated।

समालोचकक अनुसारेँ प्रो. चौधरी, अपन काल विभाजनक हेतु सेहो प्रस्तुत कएने छथि मुदा तकर विश्लेषण कएलासँ ओ सभ समीचीन नै बुझना जाइत अछि। १८३० ई.सँ आधुनिक युगक आरंभ मानबामे कोनो ठोस कारण नै भेटैत अछि। ने तँ तत्कालीन कोनो साहित्य उपलब्ध अछि आ ने मिथिलामे एहन कोनो राजनीतिक अथवा सामाजिक घटनाक सूत्र प्राप्त होइत अछि, जकर मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे प्रभाव पड़ल हुअए।

(११) डॉ. दिनेश कुमार झा 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' नामक अपन पुस्तकमे काल विभाजनक प्रसंगमे अपन निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल/ आधारकाल ८०० सँ १३५० ई. धरि

(II) मध्यकाल १३५० सँ १८५७ धरि

(III) आधुनिक काल- (क) ब्रिटिश काल १८५७ सँ १९४७ धरि

(ख) स्वतंत्रता काल १९४७ सँ अद्यःपर्यन्त।

डॉ. झा आदिकालक आरंभ सिद्ध साहित्यसँ, मध्यकालक आरंभ विद्यापतिक रचनासँ आ आधुनिक कालक आरंभ अंग्रेज सबहक द्वारा राज्य स्थापना एवं नवीन शिक्षाक फलस्वरूप जीवनक नव परिस्थिति उत्पन्न भेला तथा साहित्यक 'स्पिरिट' बदलि गेलासँ एवं अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय साहित्यक मैथिली साहित्यपर प्रचुर प्रभावसँ मानैत छथि। हिनक मत समालोचकक अनुसारेँ बहुत अंश धरि तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक एवं समीचीन अछि। ई शुद्ध राजनैतिक दृष्टिसँ काल-विभाजन कएने छथि, मुदा आदिकालमे हुनक ओ दृष्टिकोण काज नै कएलकनि, तहिना आधुनिक कालकेँ ब्रिटिश काल आ स्वतंत्रताकालकेँ भागमे विभक्त करब, उचित नै बुझाइत अछि। १९४७मे भारत अवश्य स्वतंत्र भेल मुदा ओइसँ मैथिली साहित्यमे कोनो ऐतिहासिक दिशान्तर भेल हुअए, तकर कोनो प्रमाण नै अछि।

(१२) डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' अपन पुस्तक 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे मैथिली भाषा ओ मैथिली साहित्यक सुदीर्घ परंपरा देखि इतिहासमे काल-विभाजन एकर समस्त उपलब्ध कृत्ति, कर्ता, पद्धति ओ विषएकेँ धियानमे राखि निम्न रूपेँ कएल अछि:

(I) प्राचीन काल ७०० सँ १३२५ ई. धरि

(II) मध्यकाल १३२५ सँ १८६० धरि

(III) आधुनिक काल १८६० सँ अद्यःपर्यन्त।

(१३) डॉ. नित्यानंद झा 'मैथिली साहित्यक काल विभाजन' शीर्षक निबंधमे अपन मत ऐ प्रकारेँ व्यक्त कएने छथि:

(I) पूर्व विद्यापति काल ८०० ई.सँ १३५० ई. धरि

(II) विद्यापति काल १३५० सँ १७०० ई.धरि

(III) उत्तर विद्यापति काल १७०० सँ १९०० ई.धरि

(IV) आधुनिक काल १९०० सँ अद्यःपर्यन्त।

प्रो. सोमदेव 'मैथिली भाषा ओ साहित्य' शीर्षक निबंधमे ऐ रूपेँ कहलनि जे मैथिली साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन, जँ उपलब्ध सामग्री, प्रवृत्ति, एवं मोड़क दृष्टिएँ कएल जाए, तँ ऐ प्रकारेँ हेबाक चाही:

(I) प्राचीनकाल ८म शताब्दीसँ १८७० ई.धरि

(II) मध्यकाल १८७० ई.सँ १९३६ ई. धरि

(III) नव जागरणकाल– (क) स्वतंत्रतापूर्व १९३६ सँ १९४७ ई. धरि

(ख) स्वतंत्रता उपरान्त १९४७ सँ १९८६ ई. धरि

(ग) जनचेतना युग १९८६सँ प्रारंभ।

प्रो. धीरेन्द्र 'मैथिली प्रकाश' नवम्बर १९८६मे काल विभाजनक प्रसंगे कहैत छथि:

(I) आदिकाल ८०० सँ १३२४ ई.

(II) ज्योतिरीश्वर युग १३२४ सँ १४१२ ई.

(III) विद्यापति युग १४१२ सँ १५२७ ई.

(IV) उत्तर विद्यापति युग १५२७ सँ १८६०

(V) आधुनिक काल १८६० सँ अद्यःपर्यन्त।

(क) पुनर्जागरण युग १८९० सँ १९२५

(ख) नवयुग १९५० सँ अद्यःपर्यन्त।

समालोचक प्रो. झाक विद्यापति युग ओ उत्तर विद्यापति युगक मतसँ सहमत छथि, परन्तु ज्योतिरीश्वर नाओंसँ एक पृथक युगक कल्पनाकेँ उचित नै मानैत छथि। कारण 'वर्णरत्नाकर' सन अमूल्य ग्रंथकारक रचना करितो ओ कोनो विशेष परंपराक स्थापना नै कऽ सकलाह। १९५६ सँ नवयुग मानव सेहो अनुचित कहैत छथि, किएक तँ १९५० मे भारत अवश्य पूर्ण रूपेँ

स्वतंत्र भेल मुदा ओइसँ मैथिली साहित्यमे कोनो विशेष उल्लेखनीय ऐतिहासिक दिशान्तर उपस्थित भेल हुअए तकर कोनो प्रमाण नै अछि।

(१५) प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही'क १९६३ ई., जनवरी-मार्च अंकमे 'मैथिली साहित्यक काल विभाजन' शीर्षक निबंधमे नवीन दृष्टिकोणसँ काल-विभाजन प्रस्तुत कएने छथि:

(I) अपभ्रंश काल १००० ई. सँ पूर्व
(II) प्रारंभिक युग ११०० ई. सँ १५५६ ई.
(III) मध्य युग १५५६ ई. सँ १८५७ ई.
(IV) आधुनिक युग १८५७ ई. सँ अद्यःपर्यन्त।

अपभ्रंश युगकेँ मैथिलीक पूर्व पीठिका मानि सकैत छी। अपभ्रंश कालक अनेक रचनासँ हमरा लोकनिक साक्षात्कार होइत अछि। अतः भाषाक आधारपर ओकर नामकरण प्रारंभिक कालक पूर्वमे राखल गेल। तथापि एकर अपभ्रंश साहित्य सर्वदासँ समृद्धशाली रहल अछि। ऐ युगक 'प्राकृत पैंगलम' सदृश अपूर्व ग्रंथ प्राप्त होइत अछि। 'चर्यापद' एवं सिद्ध लोकनिक सेहो अनेक रचना सभकेँ ऐ कोटिमे राखल जा सकैत अछि। दिल्लीक बादशाह अकबर जखन सिंहासनपर बैसलाह तँ भारतक राजनैतिक स्थितिमे महान परिवर्तन भेल। ऐ समैमे मिथिलाक शासनक भार पं. महेश ठाकुरकेँ भेटलनि, तथा दिल्ली केन्द्रसँ मिथिलाक साहित्यक सेहो महान परिवर्तन भेल। गीति युगक अवसान भेलाक फलस्वरूप मैथिल विद्वानक धियान कीर्तनिञा नाटक लिखबा दिसि विशेष भेल, परन्तु ऐ नाटक सभमे जइ गीत सबहक समावेश भेल ओ पाण्डित्यपूर्ण ओ वर्गीय होमए लागल। म.म. उमापति सँ लए कए वर्तमान युगमे कवीश्वर हर्षनाथ धरि मैथिली नाटकक ईएह रूप देखल जाइत अछि।

१८५४ ई.सँ मैथिली साहित्य मध्य नवीन युगक प्रादुर्भाव होइत अछि। १८५७क पश्चात् देशमे एक नव-जागरणक संचार भेल। सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोणसँ ऐ सालक नाओं इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। एकर नेतृत्व नवीन शिक्षित बुद्धिजीवी वर्गक हाथमे रहल। ऐ सालमे भारतमे राजक्रांति भेल जकर फलस्वरूप एकर प्रत्येक क्षेत्रमे परिवर्तन भेल। अतएव भाषा एवं साहित्यक क्षेत्रमे परिवर्तन अवांछनीय नै कहल जा सकैछ। अतएव नवीन दृष्टिकोणकेँ धियानमे राखि मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक प्रारंभ १८५७ सँ मानबामे आपत्ति नै होमक चाही।

मुदा प्रस्तुत विभाजनकेँ लऽ कए मैथिली साहित्य मध्य एकगोट आविष्कारक विषए बनि गेल अछि। म.म. जी एवं जयकान्त मिश्र आधुनिक कालक प्रारंभ १८६०सँ मानैत छथि, एवं कुमार श्री गंगानंद सिंह तथा भोला लालदासक मतानुसारेँ १८०० ई. मानल गेल अछि।

डॉ. जयकान्त मिश्र अपन तर्क प्रस्तुत करैत कहैत छथि जे १८६०मे मिथिलाक शासक 'कोर्ट ऑफ वर्डस'क अधीन चलि गेल तकर फलस्वरूप भाषा-साहित्य नवरूप धारण कए लेलक, ऐमे हिन्दीक साक्षात् प्रभाव देखना जाइत अछि, जे रवीन्द्रक कवितासँ प्रभावित भए श्री सुमनजी कविता लिखल। एकर अवलोकनसँ साक्षात् ज्ञात होइत अछि जे देशी एवं विदेशी दुनू दृष्टिएँ एकर प्रभाव मिथिलाक आध्यात्मिक जीवनपर पड़ल।

मुदा १८५७सँ आधुनिक युगक प्रारंभ मानबाक सबल प्रमाण भेटैत अछि, अंतर्राष्ट्रिय दृष्टिकोणसँ सेहो पर्याप्त छै, ऐ क्रांतिक प्रधान कारण छल जे ऐसँ व्यक्तिक स्वतंत्रताक अभ्युदय हुअए। एक दिसि तँ ई लोकनि अपन प्राचीन संस्कृतिक सुरक्षा लेल उत्सुकता देखौलनि तँ दोसर दिसि ओइ संस्कृतिक परंपराक सुरक्षा एवं विकासक हेतु सचेष्ट रहलाह।

समग्र रूपेँ विचार कएला उत्तर निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे मैथिली साहित्यक मध्य आधुनिक कालक बड़ पैघ महत्व छै, एतेक दिन धरि भाषा-साहित्य अन्हारमे टापर-टोइया दैत छल मुदा आधुनिक कालमे आबि कऽ ई नवीन रूप धारण कए लेलक। आधुनिक काव्यक प्रारंभमे चन्दा झाक नाओं लेल जाइत अछि। चन्दा झा मैथिलीमे नवयुगक प्रवर्त्तक छलाह। वर्तमानमे मैथिली कवितामे शैली एवं भावधाराक दृष्टिएँ महान परिवर्त्तन भेल। नवीन युगक पदार्पण भेलासँ कविता कामिनी अपन नैसर्गिक सुषमाक भारकेँ वहन करबामे असमर्थ भेलीह एवं ओकरा संग अग्रलेखक एवं पाठकक अभिरूचि एवं मनोरंजनक हेतु उपन्यास साहित्यपर विशेष जोर देल गेल। ऐ सभ दृष्टिकेँ धियानमे राखि १८५७सँ आधुनिक कालक प्रारंभ मानब उचित हएत।